भाग–चार

4.1 पुरूष्कार :–

4.1.1 विभागीय पुरूष्कार

1. **शहीद अमृता देवी विशेनोई पुरूष्कार :– शहीद अमृता देवी विश्नोई वृक्ष रक्षा पुरूष्कार प्रत्येक** वर्ष वनों की रक्षा एवं वन संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों को दिया जाता है। यह पुरस्कार तीन श्रेणियों में दिया जाता है:– 1. संस्थागत, 2. व्यक्तिगत (अशासकीय) तथा 3. व्यक्तिगत (शासकीय)। वर्ष 2010 एवं 2011 हेतु उपरोक्त पुरस्कार 05 जून 2015 को दिया गया था।

2. **बसामन मामा स्मृति वन्य प्राणी संरक्षण पुरूष्कार :–** मध्य प्रदेश शासन द्वारा बसामन मामा स्मृति वन्य प्राणी संरक्षण पुरूष्कार निम्न दो श्रेणियों में दिये जाते हैं:–

विंध्य क्षेत्र हेतु – विन्ध्य क्षेत्र में वन एवं वन्यप्राणी संरक्षण एवं वन संवर्धन के लिये प्रदर्शित की गई शूरवीरता, अदम्य साहस, उत्कृष्ट कार्य एवं उल्लेखनीय योगदान के लिये शासकीय तथा अशासकीय व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है।

राज्य स्तरीय – निजी भूमि पर उत्कृष्ट वृक्षारोपण के लिये यह पुरूष्कार दिया जाता है।

वर्ष 2010 एवं 2011 हेतु उपरोक्त पुरूष्कार जून 2015 में दिया गया था।

3. **वन्यप्राणी पुरूष्कार :–** वन्यप्राणी संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान के लिये कर्मचारियों एवं अधिकारियों को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य शासन द्वारा वर्ष 2008 में वन्यप्राणी संरक्षण पुरूष्कार संस्थापित किये गये हैं। इस पुरूस्कार के अंतर्गत उप वनसंरक्षक/ सहायक वन संरक्षक स्तर के लिये 01, वनक्षेत्रपाल स्तर के लिये 01 तथा उप–वनक्षेत्रपाल वनपाल/ वनरक्षक स्तर के लिये 04 पुरूस्कारो का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक पुरूस्कार की राशि 50 हजार रूपये हैं। पात्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों के चयन हेतु शासन द्वारा प्रमुख सचिव, वन की अध्यक्षता में 12 सदस्यीय समिति का गठित है जिसमें 06 अधिकारी और 06 अशासकीय सदस्य हैं। वन्यप्राणियों की सुरक्षा, अनुश्रवण एवं रेस्क्यू ऑपरेशन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए तीन वर्गों में कुल 38 लोगों को वर्ष 2015 में पुरस्कृत किया गया।

4. वर्ष 2016–17 से सतपुड़ा पर्वत श्रंखला एवं विंध्य पर्वत श्रंखला अन्तर्गत वनक्षेत्रों के संरक्षण एवं संर्वद्वन हेतु उत्कृष्ट कार्य करने वाले 02 वन रक्षकों को पुरूष्कृत करने हेतु एक पुरूष्कार संस्थित किया गया है। उक्त पुरूष्कार श्री आर.डी.शर्मा, सेवानिवृत्त, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश के पहल पर

प्रारंभ किया गया है, जिसके लिये पुरूष्कार राशि की व्यवस्था उनके द्वारा स्वरचित पुस्तक की रायल्टी राशि से हो सकेगा।

4.1.2 मध्यप्रदेश गौरव सम्मान

नवम्बर 2016 में श्री आर.श्रीनिवास मूर्ति को यह सम्मान उन्हें संचालक पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के कार्यकाल के दौरान पन्ना टायगर रिजर्व से विलुप्त हो चुके बाघों का पुनर्वास कार्यक्रम सफलता पूर्वक संचालन हेतु प्रदाय किया गया ।

4.2. अभिनव योजना एव अभिनव प्रयोग

4.2.1 दीनदयाल वनांचल सेवा

दीनदयाल वनांचल सेवा का शुभारंभ 20 अक्टूबर 2016 को माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश के कर–कमलों द्वारा किया गया।

यह योजना वन सुरक्षा एवं विकास के साथ सुदुर वनांचलों में पदस्थ वनकर्मचारियों के सहयोग से वनवासियों के कल्याण एवं सेवा का एक अभिनव प्रयास हैं। मध्य प्रदेश में 94,689 वर्ग किलोमीटर वन है और वनक्षेत्र से 5 किमी. दुरी तक के वनों में 15,228 वन समितिया कार्यरत है। स्थनीय लोगों को वनों की सुरक्षा एवं विकास में सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से बनाई गई यह समितियां दूरदराज के क्षेत्रों में हैं और इन समितियों में ग्रामिणों से वनविभाग के कर्मचारियों का सतत् सम्पर्क बना रहता है। अतः वनांचलों में जहां अन्य विभागों की पहुॅच कम हैं, वहां शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण इत्यादि में वनविभाग के सहयोग से बेहतर सुविधायें उपलब्ध कराई जा सकती है। यह योजना स्वस्थ जन–स्वस्थ वन की अवधारणा पर आधारित है। इस योजना के तहत सुदुर वनांचलों में पदस्थ वनकर्मियों द्वारा लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्कूल शिक्षा एवं आदिम जाति कल्याण विभाग में प्रचलित विभिन्न कार्यक्रमों एवं वनवासियों तक विभागीय योजनाओं का लाभ पहुचानें में सहयोग किया जाना लक्षित है। यह योजना अन्तर्विभागीय समन्वय का एक अभूतपूर्व उदाहरण है। इस योजना के अन्तर्गत मुख्य रूप से (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्कूल िाक्षा विभाग एवं आदिमजाति कल्याण विभाग) चार विभागों का सहयोग कर रहा है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभागः– स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक विशेष वनरक्षक स्वास्थ्य प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया, जिसका विमोचन माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किया गया था। स्वास्थ्य विभाग द्वारा वनरक्षकों के स्वास्थ्य उन्मुखिकरण प्रशिक्षण के लिये प्रदेश स्तर पर मास्टर ट्रेनर्स (आशा) को प्रशिक्षित कर विभिन्न वनमंडलों के साथ संलग्न किया गया।

स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से जनवरी 2016 तक 273 प्रशिक्षण पूर्ण किये गये है, जिसमे कुल 8000 वनकर्मी प्रशिक्षित किये जा चुके है।

सुदुर वनांचलों में एवं वनग्रामों में जनवरी 2016 तक 401 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन हुआ है एवं 35000 से अधिक वनवासी लाभान्वित हुये है। इन शिविरों के माध्यम से मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर कम करने जटिल बीमारीयों से ग्रसित मरीजों को निकटतम अस्पताल पहुचाने की सुविधायें वन विभाग द्वारा की गई है।

महिला बाल विकास विभाग :– महिला बाल विकास विभाग की योजनाओं के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं का परीक्षण कराने महामारी जैसे गंभीर रोगों की सुचना देने टीकाकरण करने, मलेरिया उन्मूलन, किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य सुधार, कुपोषण दूर करने के प्रयास जारी है।

स्कूल शिक्षा विभागः– वनांचलों में स्कूल शिक्षा द्वारा संचालित शालाओं में वर्षा ऋतु में पौधा रोपण एवं पौधों की देखभाल करने की प्रेरणा देने की गतिविधियां संचालित की जा रही है। वनांचलों के स्कूलों में वनकर्मी निशुल्क शिक्षा तथा स्वच्छता एवं पर्यावरण संबंधी जानकारी छात्र–छात्राओं को दी जा रही हैं।

महिला वनरक्षक द्वारा अध्यापक कार्यवनग्राम बिछिया, मण्डला

वन परिक्षेत्र गढी (रायसेन) की प्राथमिक कन्या शाला बोरपानी बच्चो को पढाते हुए वन अधिकारी

वन अधिकारियों ने शुरू करवाई कोचिंग

आदिमजाति कल्याण विभागः– महिला बाल विकास विभाग द्वारा वनग्रामों व संवेदनशील क्षेत्रों में वनविभाग को आंगनबाड़ी निर्माण की एजेंसी नियुक्त करते हुए 42 स्थानों पर आंगनबाड़ी निर्माण का कार्य स्वीकृत किया है।

अलीराजपुर

दीनदयाल वनांचल योजना के तहत अद्यतन विभिन्न वृत्तों में एवं राष्ट्रीय उद्यानों में–अन्तर्विभागीय बैठकों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। दीनदयाल वनांचल सेवा का प्रचार–प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला 2016 में प्रदर्शनी लगाकर किया गया। इस योजना के अन्तर्गत कार्यक्रमों एवं आयोजनों के माध्यम से न केवल अन्तर्विभागीय तालमेल बढ़ रहा है, वरन विभिन्न विभागों की योजनाओं पर समझ एवं दुर्गम वनांचलों के रहवासियों तक लाभ पहुचाने के सतत् प्रयास किये जा रहे है।

4.2.2 रोजड़ा ट्रांसलोकेशन

वन्यप्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 12 (बीबी) के तहत 50 रोजड़ों को फसल हानि वाले क्षेत्रों से पकड़कर अन्य संरक्षित क्षेत्रों में छोड़ने की अनुमति मुख्य वन्य प्राणी अभिरक्षक एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) से प्राप्त हुई। दिनांक 01.12.2016 से 12.12.2016 तक ग्राम एरा वनमण्डल मंदसौर में किराये से टेण्ट लगवाकर बोमा निर्माण किया गया व दिनांक 15.12.2016 से 26.12.2016 तक 27 रोजड़ो को पकड़कर गांधीसागर अभयारण्य के परिक्षेत्र पश्चिम गांधीसागर में सुरक्षित छोड़ा गया।

रोजड़ा ट्रांसलोकेशन कार्यवाही में निम्नाकिंत अभिनव प्रयोग किये गयेः–

- संरक्षित क्षेत्रों के बाहर की गई प्रथम कार्यवाही।
- ग्रामीणों का सराहनीय सहयोग :– सम्पूर्ण रोजड़ा ट्रांसलोकेशन कार्यवाही में ग्राम एरा व आसपास के ग्रामिणों ने सराहनीय सहयोग किया।
- ड्रोन का प्रयोग :– ट्रांसलोकेशन की कार्यवाही के पुर्व केप्चर स्थल, रिलीज स्थल की ड्रोन के माध्यम से वीडियोग्राफी व फोटोग्राफी करवाकर अध्ययन किया गया जिससे रोजड़ो के व्यवहार, आवास व खेतों में किये जारहे नुकसान के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।
- घोड़ो का प्रयोग :– सामान्य श्रमिक को उबड़खाबड़ क्षेत्र में रोजड़ो को घेरकर चलने दौड़ने में कठिनाई होती है ऐसी स्थिति को देखते हुए 27 घोड़ों का प्रशिक्षित घुड़सवारों सहित रोजड़ों को घेरने में प्रयोग किया गया।
- हेलीकॉप्टर का प्रयोग :– रोजड़ों को घेरने में हेलीकॉप्टर का प्रयोग किया गया जो सफल रहा।

4.2.3 वन एवं वन्य प्राणी प्रबंधन में ड्रोन का प्रयोग

वन विभाग में बढते अपराध को रोकने वन एवं वन्य प्राणी प्रबंधन के क्षेत्र में ड्रोन का प्रयोग प्रारंभ किया गया है, जो कि एक अभिनव पहल है एवं इसका प्रयोग कारगर साबित हुआ है। वन्यप्राणियों पर नजर रखने के लिये इसका प्रयोग पन्ना टायगर रिजर्व में किया गया तथा उज्जैन वन वृत्त में प्रायोगिक तौर पर ड्रोन का प्रयोग किया गया है। अलीराजपुर के पुनरीक्षणाधीन कार्य आयोजना में भी दुरूह मतवाड़ क्षेत्र के वनों की वन संनिधि के आंकलन में कार्य आयोजना अधिकारी द्वारा इसका उपयोग किया गया। ड्रोन सतह से 10 मीटर उपर तक रहकर एच डी कैमरे की सहायता से छायाचित्र व चलचित्र बनाता है, जिससे वन संनिधि, वन घनत्व व पेड़ पौधों एवं वन्य प्राणी व उनके आवास की जानकारी सूक्ष्मता से प्राप्त होती है। विगत दिनों देवास के पास नागदा में आये बाघ पर ड्रोन की सहायता से ही नजर रखी गई थी। देवास के पास शंकरगढ़ व आस–पास के क्षेत्र में उत्खन्न खदानों का निरीक्षण ड्रोन द्वारा ही किया गया था। सागौन के घने व दुर्गम वन क्षेत्रों में अवैध कटाई की रोकथाम अकेले वन रक्षक या दल के पैदल घूमने से एक सीमित क्षेत्र की जांच की जा सकती है, परंतु ड्रोन द्वारा लगभग एक बार में पांच वर्ग कि.मी. तक क्षेत्र की सूक्ष्मता से जांच की जा सकती है, व ड्रोन द्वारा लिये गये छायाचित्र व चलचित्र को अपराधों की जांच में सुदृढ़ साक्ष्य के रूप में भी लिया जा सकता है। वन्य प्राणियों की ट्रेकिंग में भी ड्रोन का प्रयोग काफी उपयोगी है, क्योंकि प्रायः बाघ, पेंथर एवं अन्य वन्य प्राणी एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विचरण करते है, जिन पर नजर रखने में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

4.3 महत्वपूर्ण सांख्यिकी
वनों का क्षेत्रफल

मध्य प्रदेश के वनों के क्षेत्रफल, घनत्व, प्रकार आदि से संबंधित महत्वपूर्ण आंकड़े तालिका क्रमांक 4.1 से 4.4 में दर्शित है।

तालिक क्रमांक 4.1
देश की तुलना में मध्य प्रदेश के वन

(वर्ग कि.मी.)

	भौगोलिक क्षेत्र	वनक्षेत्र	प्रतिशत वनक्षेत्र
भारत	32,87,263	7,71,821	23.48
मध्य प्रदेश	3,08,245	94,689	30.72

(स्त्रोत–स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2015)

तालिक क्रमांक 4.2
प्रदेश के वनक्षेत्रों की वैधानिक स्थिति

(वर्ग कि.मी.)

वर्गीकरण	क्षेत्रफल	प्रतिशत
आरक्षित वन	61,886	65.36
संरक्षित वन	31,098	32.84
अन्य	1,705	1.80
योग	**94,689**	**100.00**

(स्त्रोत–स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2015)

भारतीय वन सर्वेक्षण (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) देहरादून द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन के आधार पर प्रदेश में विगत पॉच वर्षों के वनावरण की स्थिति की तालिका क्रमांक 4.3 में दर्शित है।

तालिक क्रमांक 4.3
प्रदेश के वनों का घनत्व–वार क्षेत्रफल

(वर्ग कि.मी.)

वनों का प्रकार	प्रतिवेदन वर्ष		
	2011	**2013**	**2015**
अति सघन वन	6640	6632	6629
सामान्य सघन वन	34986	34921	34902
खुले वन	36074	35969	35931
योग	**77700**	**77522**	**77462**
(खुला रिक्त क्षेत्र) *	16989	17167	17227

*रिक्त खुला क्षेत्र– ऐसे वन जिनका घनत्व 0.1 से कम है। इसका उल्लेख स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट में नहीं है।
प्रदेश में वनों के प्रकार तथा क्षेत्रफल की जानकारी तालिका क्रमांक 4.4 में दर्शित है।

तालिक क्रमांक 4.4
प्रदेश के वनों के प्रकार और क्षेत्रफल

(वर्ग कि.मी.)

संरचना	क्षेत्रफल	प्रतिशत
सागौन	18,332	19.36
साल	3,932	4.15
मिश्रित एंव अन्य	55436	58.49
रिक्त (खुला क्षेत्र)	16989	18.00
योग	94,689	100.00

बांस वनक्षेत्र 13059 वर्ग कि0मी0 अतिव्यापी क्षेत्र)

भारतीय वन सर्वेक्षण देहरादून से प्रकाशित प्रतिवेदन अनुसार जिलेवार वनावरण की स्थिति परिशिष्ट क्रमांक 19 पर दी गई है।

———————